पटना जिला के संसदीय चुनाव क्षेत्रों में मतदान प्रारूप का निर्धारण (1977–2004)

डॉ० रोहित*

सार :–वर्तमान शोध पत्र में पटना जिला के संसदीय चुनाव क्षेत्रों में 1977–2004 के दौरान मतदान प्रारूप के निर्धारण को प्रस्तुत किया गया है। निर्वाचन भूगोल राजनीति भूगोल की नई शाखा है, जो तरुणावस्था में है। इसके परिणामस्वरूप इसकी संकल्पना में लगातार परिवर्तन हो रहा है। पटना जिला के अन्तर्गत पटना एवं बाढ़ दो संसदीय क्षेत्र है। प्रस्तुत शोध–पत्र के माध्यम से पटना तथा बाढ़ संसदीय चुनाव क्षेत्र में मतदान प्रारूप को निर्धारित करने वाले सामाजिक–आर्थिक चरों के प्रभाव की चर्चा की गई है। प्रस्तुत शोध–पत्र में 7 सामाजिक–आर्थिक चरों का प्रयोग किया गया है, इन्हें वर्गीकृत कर स्वतंत्र चर के रूप में लिया गया है और प्रदेश के मतदान प्रारूप के साथ सह–संबंध स्थापित किया गया है।

महत्वपूर्ण शब्द : राजनीति भूगोल, निर्वाचन भूगोल, मतदान प्रारूप, सामाजिक–आर्थिक चर, सह–संबंध।

भूमिका :–द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद राजनीति भूगोल की नवीन शाखा के रूप में निर्वाचन भूगोल का जन्म हुआ। निर्वाचनों के भौगोलिक अध्ययन के संबंध में महत्वपूर्ण कार्य फ्रांसिसी भूगोलवेत्ता एण्डरे सेगफ्रीड द्वारा 1913 में फ्रांस के एड्रिच प्रदेश के संदर्भ में किया गया। सेगफ्रीड को निर्वाचन भूगोल का जनक कहा जाता है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद इस दिशा में अनेक कार्य किए गए। 1949 में बी०के० डीन द्वारा न्यूफाउलैण्ड के संदर्भ में तथा क्रिसलर द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका के संदर्भ में निर्वाचनों का अध्ययन किया गया। लेकिन राजनीतिक भूगोल में निर्वाचनों के भौगोलिक अध्ययन के संदर्भ में वास्तविक प्रारंभ जे०आर०वी० प्रेसकॉट के प्रकाशित लेख "द फंक्शन एण्ड मेथड ऑफ इलेक्टोरल ज्योग्राफी" से होती है, जिसमें उन्होंने चुनाव सांख्यिकी का राजनीति भूगोल में उपयोग को स्पष्ट किया।

अध्ययन के उद्देश्य :–वर्तमान शोध–पत्र के विषय पटना जिला के संसदीय चुनाव क्षेत्रों में मतदान प्रारूप का अध्ययन है। इस अध्ययन के निम्न उद्देश्य हैं–

1. कार्यिक जनसंख्या के प्रभाव का अध्ययन।
2. अनुसूचित जाति जनसंख्या के प्रभाव का अध्ययन।
3. साक्षर जनसंख्या के प्रभाव का अध्ययन।

***सहायक शिक्षक (भूगोल) जी०ए० उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, लालगंज, वैशाली**

अध्ययन विधि एवं उपागम :–वर्तमान शोध–पत्र का क्षेत्र पटना जिला का संसदीय चुनाव क्षेत्र है। अतः निर्वाचन से संबंधित आँकड़ों का एकत्रीकरण पटना स्थित निर्वाचन आयोग के कार्यालय से किया गया है। साथ ही अन्य महत्वपूर्ण सूचनाओं की प्राप्ति पटना विश्वविद्यालय पुस्तकालय तथा ए०एन० सिन्हा शोध संस्थान से की गई है।

निर्वाचन भूगोल के अध्ययन हेतु दो उपागमों को प्रधानता दी गई है–

1. **क्षेत्रीय उपागम** :–इस उपागम के अन्तर्गत यह स्पष्ट किया जाता है कि एक क्षेत्र के प्राकृतिक वातावरण का सामूहिक अथवा एकांगी रूप से निर्वाचनों पर क्या प्रभाव पड़ा है। इस उपागम के भी दो स्वरूप हैं–

(अ) क्षेत्रीय संरचनात्मक उपागम
(ब) क्षेत्रीय पारिस्थितिकी उपागम

क्षेत्रीय संरचनात्मक उपागम के अन्तर्गत निर्वाचनों से संबंधित विभिन्न सूचनाओं जैसे–निर्वाचन इकाइयाँ, प्रत्येक क्षेत्र में निर्धारित सदस्यों की संख्या, विभिन्न पार्टियों के उम्मिदवारों की स्थिति, चुनाव परिणाम का विभिन्न क्षेत्रों में विश्लेषण आदि का विश्लेषण किया जाता है। इन्हें 'छायाकरण विधि' द्वारा स्पष्ट प्रदर्शित किया जाता है। 'रेखाचित्रों' का उपयोग भी सामान्य होता है।

क्षेत्रीय पारिस्थितिकीय उपागम के अन्तर्गत निर्वाचन परिणामों का पर्यावरण या सम्पूर्ण पारिस्थितिकी के संदर्भ में विश्लेषण किया जाता है। सेगफ्रीड, राइट तथा ब्रुगहार्ड आदि ने इस पद्धति को अपनाया।

2. **व्यवहारात्मक तथा स्थानिक उपागम** :– निर्वाचनों के भौगोलिक अध्ययन का एक अन्य उपागम मतदान व्यवहार का अध्ययन करना है, अर्थात् मतदान व्यक्ति अथवा समुदायों का अंग है और मानव व्यवहार स्थिति, स्थान तथा समय के साथ परिवर्तित होता रहता है। 1970 के बाद इस उपागम पर जोर दिया जाने लगा। इसके प्रमुख प्रवर्तक कॉक्स, रेनोल्ड, जॉन्सटन आदि थे।

स्थानिक उपागम के अन्तर्गत 'पड़ोसी प्रभाव' सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। इस विधि में विभिन्न कारकों का आपस में सह–संबंध स्थापित कर एक क्षेत्र में तथा अनेक क्षेत्रों में मतदान का प्रारूप एवं विभिन्न दलों की प्रभुत्ता अथवा न्यूनता का पता लगाया जा सकता है। स्थानगत तथा समयगत विश्लेषण निर्वाचन भूगोल का एक प्रमुख पक्ष है।

अतः स्पष्ट है कि क्षेत्रीय उपागम तथा व्यवहारात्मक एवं स्थानिक उपागम दोनों में ही मानचित्रों का महत्वपूर्ण योग होता है, अर्थात् मानचित्रों की सहायता से विविध तथ्यों न केवल निरूपण अपितु विश्लेषण भी किया जाता है।

अध्ययन क्षेत्र :–वर्तमान शोध का क्षेत्र पटना जिला के संसदीय चुनाव क्षेत्र है, जिसका भौगोलिक विस्तार 2503′ उ० से 2507′ उत्तरी अक्षांश तथा 8406′ से

8509′ पूर्वी देशान्तर के मध्य है। यह उपोष्ण एवं आद्र जलवायु का क्षेत्र है। अध्ययन क्षेत्र में कुल मतदाताओं की संख्या 2982204 है, जिसमें 1610057 पुरुष तथा 1372147 महिलाएँ हैं। अध्ययन क्षेत्र का निर्वाचन घनत्व 3219 मतदाता प्रति वर्ग किमी० है।

पटना संसदीय चुनाव क्षेत्र अनेक राजनीतिक दलों की गतिविधियों का केन्द्र है। वर्तमान शोध में 1977–2004 तक के संसदीय चुनाव अर्थात् छठी लोकसभा चुनाव से चौदहवीं लोकसभा चुनाव तक का अध्ययन शामिल है। अतः स्पष्ट है कि ये क्षेत्र राजनीतिक दलों की विविधता का क्षेत्र है जो मतदाता व्यवहार के अध्ययन की ओर ध्यान आकर्षित करता है।

मानचित्र

STUDY AREA

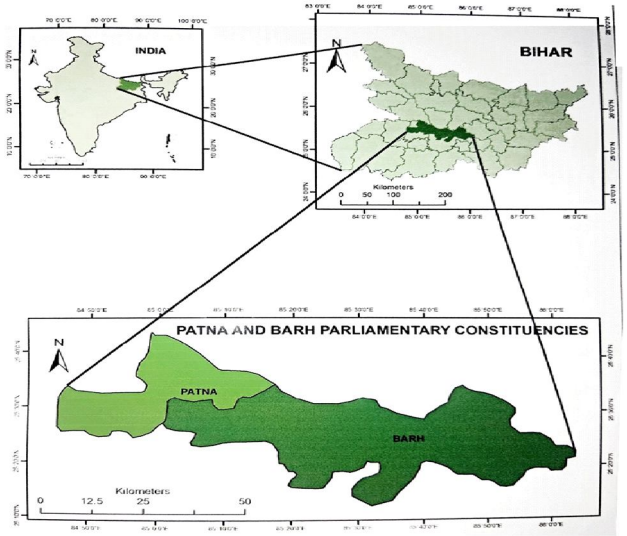

राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में अध्ययन की उपयोगिता :–वर्तमान अध्ययन की मुख्य उपयोगिता निर्वाचन प्रारूप का अध्ययन करना है। इसका भौगोलिक अध्ययन क्षेत्र की राजनीतिक व्यवस्था, मतदाता व्यवहार तथा भविष्य की योजनाओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है। वर्तमान अध्ययन दिशा–निर्देश दे सकता है। इस तरह के शोध कार्य समय और क्षेत्र की विविधता के आधार पर किए जाते हैं। इस प्रकार के शोध कार्य अन्य प्रदेशों के लिए मॉडल बन सकते हैं।

मतदान प्रारूप का अध्ययन एवं सामाजिक–आर्थिक चरों का प्रभाव :–वर्तमान विश्लेषण का यह पहलू निर्वाचन भूगोल के क्षेत्रीय परिस्थितिकी उपागम को प्रदर्शित करता है, क्योंकि यह उसके संपूर्ण वातावरण के संदर्भ में स्थानिक प्रारूप का

विश्लेषण करता है। सामाजिक एवं आर्थिक वर्ग, धर्म, राष्ट्रीयता तथा जाति में क्षेत्रीय विविधता इसके विश्लेषण के प्राथमिक कारक हैं। इस प्रकार के विश्लेषण में, किसी एक को सामाजिक–आर्थिक चरों से संबंधित आँकड़ों का प्रयोग करना होता है। इस प्रकार के विधि का प्रयोग करते हुए प्रेसकॉट[1] कहते हैं–"राजनीतिक भूगोलवेत्ता मतदान प्रारूप के आधार का विश्लेषण करते प्रतीत होते हैं और यह भविष्यवाणी करते हैं कि जब प्रवजन होता है तब कैसे प्रारूप में परिवर्तन आता है।"

मतदान प्रारूप के क्षेत्रीय पारिस्थितिकी अध्ययन का आधुनिक प्रयास साठ के दशक में सांख्यिकीय विधियों के प्रयोग के साथ हुआ। साख्यिकीय विधि के बीच सह–संबंध का परीक्षण होने लगा। परंपरागत निर्वाचन भूगोल की शाखा का सांख्यिकीय विधियों के प्रयोग से बेहद लाभ हुआ, विशेषकर विविध प्रकार के सह–संबंध तकनीकों ने प्रमाणित कर दिया कि परिकल्पनाओं के सत्यापन में उनका महत्वपूर्ण स्थान है।[2] डोगन[3] (1967) ने फ्रांस तथा इटली के दलों के अपने पारिस्थितिक अध्ययन में लेट मतदान तथा कार्यिक वर्ग के बीच सह–संबंध ज्ञात करने का प्रयास किया। केपेची तथा गल्ली[4] (1969) ने इटली में दलीय मतदान का पारिस्थितिक विश्लेषण प्रस्तुत किया। जो सामान्य सह–संबंध पर आधारित था तथा इसका उद्देश्य संगठित संघों द्वारा साम्यवादी तथा क्रिश्चियन प्रजातंत्र मतों के बीच सह–संबंध के कारण को ज्ञात करना था। अलार्डट्तथा पेसोनेन[5] (1967) ने फिनलैण्ड में दलों के सामाजिक आधार के समर्थन के अंतर को ज्ञात करने के लिए कारणात्मक विश्लेषण का प्रयोग किया।

वर्तमान अध्ययन में कुछ निश्चित प्रतिबंधों एवं सीमाओं के कारण सामान्य कोटि क्रम सह–संबंध तथा प्रतिपगमन तकनीकि का प्रयोग किया गया है, जो क्षेत्रीय इकाई तथा जनगणना के आँकड़ों के समस्याओं के समाधान से संबंधित है। हमारे देश में व्यक्तिगत कारक की तुलना में समूह कारक ज्यादा महत्वपूर्ण है। इसलिए पश्चिम के जटिल तकनीक अच्छे परिणाम नहीं दे सकते हैं। वर्तमान अध्ययन में कारक विश्लेषण विधि का प्रयोग नहीं किया गया है, जिसका मूल कारण इकाईयों (मात्र–2) की संख्या का कम होना है।

वर्तमान अध्ययन क्षेत्र तथा कारक विश्लेषण विधि का प्रयोग इस संबंध में साकारात्मक परिणाम नहीं दे सकता है।

वर्तमान अध्ययन में 7 सामाजिक आर्थिक चरों का प्रयोग किया गया है, इन्हें वर्गीकृत किया गया और स्वतंत्र चर के रूप में लिया गया है तथा इन्हें प्रदेश के मतदान प्रारूप के तीन विविध निर्वाचन विशेषताओं के साथ सह–संबंध स्थापित किया गया है। स्पीयर्समैन के कोटि क्रम सह–संबंध के सूत्र $1-\frac{6\sum d^2}{N(N^2-1)}$ का प्रयोग किया गया है। यह विधि वैसे प्रदेशों के लिए उपयुक्त है। जहाँ इकाईयों की संख्या 30 से कम है। परिणाम +1 से –1 के बीच आता है। जिसके महत्व के विभिन्न

स्तरों पर स्वतंत्रता के अंश का कार्य सूत्र D.F. = N-2 पर किया गया है। तालिका संख्या 01 से 07 सामाजिक–आर्थिक चरों के सह–संबंध को तीन विविध निर्वाचन विशेषताओं के साथ महत्व के विभिन्न स्तर पर दिखया गया है।

तालिका–01

निर्भर	सामाजिक–आर्थिक चर (स्वतंत्र)						
मतदान प्रारूप	नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत	महिला जनसंख्या का प्रतिशत	कार्यिक जनसंख्या का प्रतिशत	वृद्ध जनसंख्या का प्रतिशत	साक्षर जनसंख्या का प्रतिशत	अनुसूचित जाति जनसंख्या का प्रतिशत	अनुसूचित जनजाति जनसंख्या का प्रतिशत
निर्वाचन प्रक्रिया	+0.359	+0.074	+0.577**	+0.292	–0.048	+0.513*	–0.001
अप्रभावी सहभागिता	–0.042	–0.117	–0.085	–0.267	–0.217	–0.312	.0.438
शासनकर्ता का सम्बद्ध	–0.015	+0.109	+0.238	–0.641**	–0.694***	–0.108	+0.424

* 0.01 स्तर का प्रभावकारी

** 0.05 स्तर का प्रभावकारी

*** 0.02 स्तर का प्रभावकारी

दिए गए तालिका से स्पष्ट है कि बहुत कम सामाजिक–आर्थिक चर, जो वर्तमान विश्लेषण में लिए गए हैं, मतदान प्रारूप के साथ महत्वपूर्ण सह–संबंध प्रकट करते हैं। निर्वाचन सहभागिता कार्यिक जनसंख्या तथा अनुसूचित जाति जनसंख्या के साथ महत्वपूर्ण धनात्मक सह–संबंध प्रस्तुत करती है। अतः कार्यिक जनसंख्या तथा निर्वाचन सहभागिता की दृष्टि से यह माना जा सकता है कि दरार के आयाम कार्यिक अक्ष पर आधारित है, जिसमें कार्यिक जनसंख्या की प्रवृत्ति होती है कि वह निर्वाचन प्रक्रिया में कार्यिक हिस्सा ले, जो विभिन्न श्रमिक संघ में दरार प्रतिरूप उत्पन्न करता है, विशेषकर "लेट आधारित" संसदीय क्षेत्र जैसे–पटना के संदर्भ में। कार्यिक जनसंख्या की निर्वाचन सहभागिता न सिर्फ लेट आधारित संसदीय क्षेत्र में है, बल्कि इसका वृहद् क्षेत्रीय विस्तार संपूर्ण प्रदेश में भी देखने को मिलता है। कार्यिक जनसंख्या की निर्वाचन सहभागिता निश्चित वैचारिक रंग को भी प्रदर्शित करती है, जैसे कि ये राजनीतिक दृष्टिकोण से अधिक संगठित होते हैं, जो मध्य बिहार के आधुनिक जाति आधारित समाज में दृष्टिगत है।

निर्वाचन सहभागिता तथा अनुसूचित जाति के जनसंख्या के बीच घनात्मक सह–संबंध की दृष्टि से यह मान लिया जा सकता है कि शक्तिशाली स्थानीयता के साथ उपान्त पड़ोसी प्रभाव ने इस समुदाय की जनसंख्या को निर्वाचन प्रक्रिया में कार्यिक सहभागिता लेने के लिए प्रेरित किया है। ऊँची जाति के लोगों के द्वारा इनके शोषण के विभिन्न संसदीय चुनाव क्षेत्र में इनके संकेन्द्रण को बढ़ावा दिया तथा इन्होंने अपने से संबंधित नाजुक मुद्दों में उच्च मतदान की प्रवृत्ति को जन्म दिया। राजनीतिक समझ के स्तर, विशेषकर समकालीन प्रजातांत्रिक स्थिति के संदर्भ में, ने इनके नैतिक योग्यता तथा जागरूकता में वृद्धि उत्पन्न की तथा इन्होंने

प्रदेश के संघीय समाज में निर्वाचन के महत्व को समझा। अनुसूचित जात तथा कार्यिक जनसंख्या के बीच घनात्मक सह–संबंध ने इस तथ्य को अस्वीकार कर दिया कि अनुसूचित जाति की जनसंख्या ऊँची जात के लोग के शोषण के डर से निर्वाचन प्रक्रिया में कार्यिक रूप से भाग नहीं लेते हैं।

बहरहाल, लिए गए सामाजिक–आर्थिक चरों में, अनुसूचित जनजाति को छोड़कर किसी ने अप्रभावी सहभागिता के साथ घनात्मक सह–संबंध नहीं प्रकट किया है। निर्वाचन सहभागिता में अनुसूचित जाति के 'स्थायी प्रेरणा' के कारण उनमें राजनीतिक मुद्दों के प्रति रूचि तथा नागरिकता की भावना का जन्म हुआ अनुसूचित जनजाति की अप्रभावी सहभागिता स्थायी प्रतिबंध की वजह से है, जो सामान्यतः सामाजिक–राजनीतिक विरोध को प्रकट करता है। अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का संकेन्द्रण पटना जिला में अपर्याप्त है तथा विभाजन का प्रतिरूप निश्चित है, जो समाज में इनके धीमी गति से आत्मसात तथा गतिशीलता के सामाजिक संरचना को प्रदर्शित करता है। अतः संपूर्ण प्रदेश में अप्रभावी सहभागिता निम्न स्तर पर एकसमान है और इसका सामाजिक–आर्थिक चर से किसी प्रकार का कोई बोध नहीं है।

यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि शासनकर्त्ता दल का वृद्ध जनसंख्या तथा साक्षर जनसंख्या के साथ ऋणात्मक सह–संबंध प्रकट करता है। ऋणात्मक सह–संबंध, जो वृद्ध जनसंख्या तथा साक्षर जनसंख्या के कार्यों पर आधारित है, ने पुनः इस पूर्वधारणा के विचार को अस्वीकर कर दिया है कि वृद्ध जनसंख्या सामान्यतया परंपरागत भारतीय कांग्रेस को मत देती है, क्योंकि इस दल का जन्म देश के स्वतंत्रता के साथ जुड़ा हुआ है। अतः ऋणात्मक सह–संबंध का परिणाम राजनीतिक विरोध को प्रदर्शित करता है, जो वृद्ध जनसंख्या पर स्थायी दबाव उत्पन्न करता है। वृद्ध जनसंख्या के रूचि में कमी आने का एक संभावित कारण शासन दल के प्रति उनका मोह–भंग तथा निराशा का होना है, जो स्वतंत्र भारत के कांग्रेस के गिरते स्तर तथा मूल्यहीन राजनीति से प्रेरित है।

ऋणात्मक सह–संबंध साक्षर जनसंख्या तथा शासन दल के बीच भी पाया गया है। यह एक सामान्य परिस्थिति को प्रदर्शित करता है कि जनसंख्या के कुछ वर्ग कांग्रेस पार्टी के विरुद्ध मतदान करते हैं। इस संबंध में यह दरार राज्य कार्य संबंधी ज्यादा हो सकता है जो सामाजिक–आर्थिक हितों से संबंधित हो सकता है। प्रदेश की साक्षर जनसंख्या का शासक दल के कार्य प्रणाली से मोह–भंग हो चुका है। एक ऐसा दल जो हमेशा राज्य में शासन करता है, वह भूमि सुधार तथा अन्य वांछनीय परिवर्तन को लाने में असफल रहा। कुल मिलाकर साक्षर जनसंख्या की राजनीति में रूचि तथा मित्र–पड़ोसी प्रभाव ने इन पर गहरा प्रभाव डाला है। इस प्रकार के 'प्रभाव' सामान्यतया राजनीतिक संचार तथा प्रेरणा को

जन्म देते हैं। साक्षर जनसंख्या कांग्रेस के कार्य प्रणाली के संबंध में अविश्वास की भावना रखती है तथा इसे एकान्तर संगठन तथा विपक्ष को चुनने का अधिकार है। साक्षर मतदाताओं के संदर्भ में व्यक्तिगत कारक भी एक महत्वपूर्ण तथ्य है। कुल मिलाकर, मतदाताओं का कुछ वर्ग सामान्यतया समर्पित और वंशानुगत है तथा इनके मतदान की प्रक्रिया नीति निर्माण का परिणाम है, जो परिस्थिति के समझ पर आधारित है।

उपर वर्णित विश्लेषण से स्पष्ट है कि अक्षय/सारहीन परिकल्पना स्पष्ट रूप से स्वीकृत करते हैं कि सामाजिक–आर्थिक चर एवं मतदान प्रारूप दो अलग चीज है। बहरहाल, केवल चार प्रकारणों में अक्षम/सारहीन परिकल्पना अस्वीकृत हो चुकी है कि सामाजिक–आर्थिक चर एवं मतदान प्रारूप का एक–दूसरे के साथ सह–संबंध है।

बहरहाल, वर्तमान अध्ययन में निर्वाचन घनत्व एवं उपर वर्णित तीन अलग मतदान प्रारूप के विशेषताओं के बीच कोटि क्रम सह–संबंध की गणना की गई है और यह गणना शासक दल के साथ ऋणात्मक सह–संबंध 0.794 (महत्व का स्तर 0.01) को प्रकट करता है। इस प्रकार का सह–संबंध कभी–कभी "संयोग सह–संबंध" कहलाता है, जो "उच्चतम घनत्व तथा निम्न शासक दल" का शर्त रखता है। जैसा कि पहले भी बताया जा चुका है कि पटना तथा बाढ़ संसदीय चुनाव क्षेत्र में विभिन्न नौ लोकसभा चुनाव के दौरान घनत्व में वृद्धि हुई है। इन संसदीय क्षेत्रों में मतदाताओं के समूह ने एकान्तर गठबंधन तथा विपक्ष का समर्थन किया। पटना के समर्थ में हमें निर्वाचन घनत्व तथा मतदान प्रारूप के तीन अन्य विशेषताओं के संदर्भ में संभावित कारण कार्यिक स्थिति में दरार/अंतर है। इस क्षेत्र में इस दरार की उत्पत्ति का मूल कारण है कि सरकार द्वारा निर्धारित मजदूरों की न्यूनतम आवश्यक मजदूरी को बड़े भू–स्वामियों द्वारा न देना। इसने संसदीय क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के भूमिहीन कृषकों तथा मजदूर संघों को जन्म दिया और बाद में कम्यूनिस्ट दल एवं आंदोलन का जन्म हुआ।

वर्तमान अध्ययन में 7 प्रकार के सामाजिक–आर्थिक चरों का प्रयोग विचार के लिए प्रयुक्त किया गया है, जो अध्ययन क्षेत्र में मतदान प्रारूप के निर्धारक है। बहरहाल, अन्य सामाजिक–आर्थिक चर जैसे कि धार्मिक अल्पसंख्यक, भाषायी अल्पसंख्यक, जाति एवं आर्थिक वर्ग समूह तथा आयु वर्ग समूह के साथ सह–संबंध अधिक वांछनीय परिणाम दे सकते हैं, लेकिन दुर्भाग्यवश इस प्रकार के आँकड़े अध्ययन की अवधि के दौरान उपलब्ध नहीं है। इसके परिणामस्वरूप इस प्रकार के चरों का प्रयोग विचार योग्य नहीं रखा गया है। इस प्रकार के निर्वाचक आँकड़ों की कमी के कारण दूरी–क्षय नीति का प्रयोग करना बहुत कठिन हो गया है, अतः भूगोलवेत्ताओं द्वारा दूरी को सबसे प्रथम चर के रूप में विचारयोग्य रखना चाहिए, लेकिन इस प्रकार की संकल्पना अभी तक भारतीय भूगोलवेत्ताओं द्वारा

भारतीय संदर्भ में प्रयुक्त नहीं किया गया है। जाति मतदान प्रारूप के निर्धारण का संभावित कारण है। पटना जिला में चुनाव जाति संगठन एवं समूह के आधार पर लड़ार जाता है। जातीय ध्रुवीकरण एवं संगठन समाज में संघर्ष प्रारूप को जन्म देते हैं तथा पड़ोसी प्रभाव को उत्पन्न करता है। बिहारी मतदाताओं की यह प्रवृत्ति होती है कि वे अपने जात के लोगों को वोट देते हैं।

मतभेद का प्रारूप जनता के विभिन्न वर्गों पर आधारित होता है। इस प्रकार मतभेद की प्रकृति सामाजिक–आर्थिक होती है और यह मतभेद प्रारूप को जन्म देती है, जो अध्ययन क्षेत्र के नगरीय समाज के विभिन्न कार्यिक भूमिका पर आधारित होती है। पटना जिला के अधिकांश नगरीय क्षेत्र स्थानांतरण के परिणाम हैं, जब ग्रामीण क्षेत्र से जनसंख्या स्थानान्तरित होकर नगरीय क्षेत्र में आती है तो वह जीवन बसर करने तथा अधिवासित होने के लिए मलिन बस्ति तथा शहर के बाह्य क्षेत्र में अधिवासित हो जाती है। यह एक तैरते मतदाता के रूप में होते हैं, लेकिन इनका संबंध अथवा आकर्षण विरोधी दलों के साथ होता है तथा इनके पड़ोसी प्रभाव को बाहर नहीं किया जा सकता है।

समस्याओं के संदर्भ में, मतदान प्रारूप के निर्धारकों का अध्ययन जो सह–संबंध के मॉडल के साथ संबंधित है, पारिस्थितिकी सह–संबंध एक समय–परीक्षण तथा उपयोगी तकनीक है। अध्ययन क्षेत्र में मतदान प्रारूप के नये आयामों के खोज के संदर्भ में इसका प्रयोग सफलतापूर्वक किया गया है। जटिल तकनीकि के संबंध में देखा जाए तो यह अभी एक शुरूआती चरण है। अध्ययन क्षेत्र में एकांतर संगठन तथा विरोधी दल के व्यवहारिकता के संदर्भ में कुछ रोचक परिणाम देखने को मिलते हैं। वर्तमान समय में अध्ययन क्षेत्र के समाज में पारिस्थितिकी सह–संबंध कांग्रेस पार्टी के गिरते ग्राफ को प्रदर्शित करता है।

संदर्भ–सूची :

- Prescott, J.R.V. : Political Geography, Methuen & Co., London, 1972.
- Dikshit, R.D. : Political Geography, Tata Mc Graw Hill Publishing Co. Ltd., New Delhi, 1982, p. 245.
- Dogan, M. : "Political Cleavage and Social Stratification in France and Italy", in Party System and voter Alignments (eds.) Lipset, S.M. and Rokkan, S. : The Free Press, New York, 1967, pp. 129-195.
- Capecchi, V. and Galli, G. "Determinants of Voting Behaviour in Italy : A Linear Casual Model of Analysis", Quantitative Ecological Analysis in the Social Sciences, (eds.) Dogan, M. and Rokkan, S. : The M.I.T., Press, Cambridge, 1969, pp. 235-85.
- Allardt, K. and Pesonen, P. : "Cleavages in Finnish Politica", Party System and Voter Allignments, OP., Cit., pp. 325-366.